भारतीय
आधुनिक विचारक

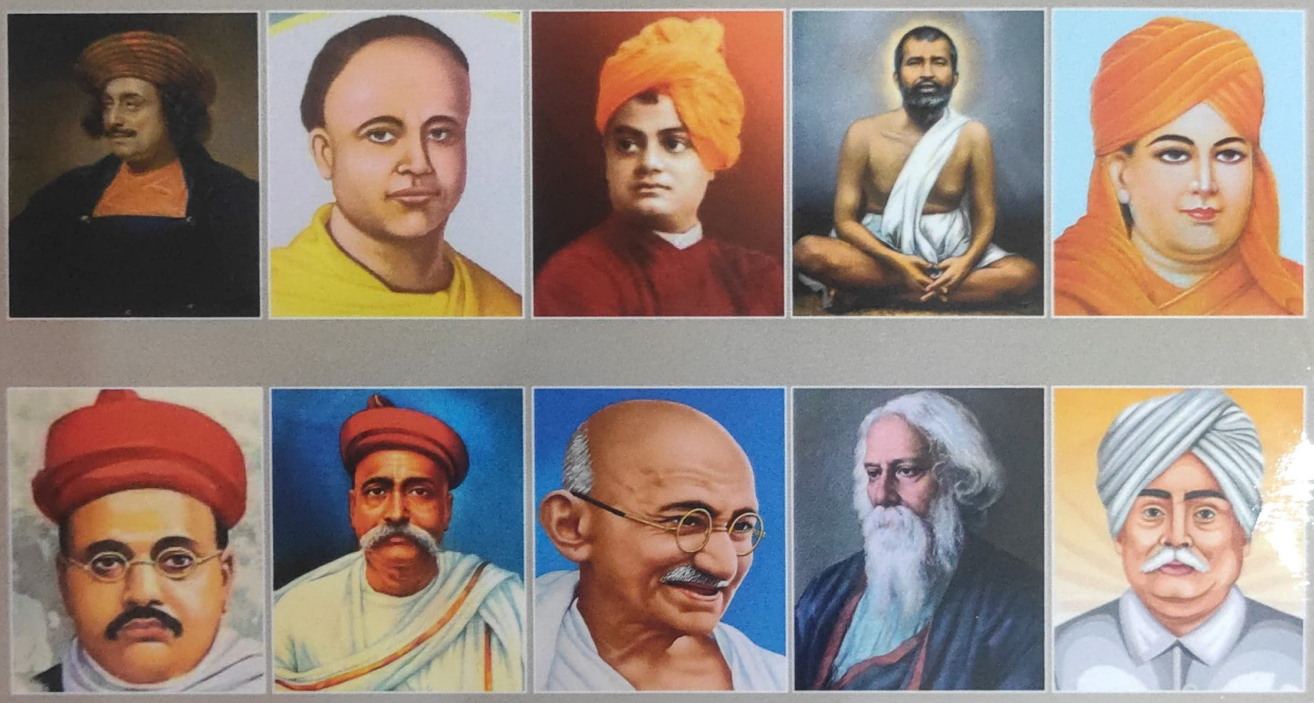

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय
डॉ० साधना त्रिपाठी, डॉ० ब्रजेश कुमार सिंह

भारतीय आधुनिक विचारक

संपादक
डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय
सह संपादक
डॉ० साधना त्रिपाठी, डॉ० ब्रजेश कुमार सिंह

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

अस्वीकरण

संकल्प प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-48772-40-4

प्रथम संस्करण : 2026

पुस्तक

भारतीय आधुनिक विचारक

संपादक

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय

सह संपादक

डॉ० साधना त्रिपाठी, डॉ० ब्रजेश कुमार सिंह

प्रकाशक

संकल्प प्रकाशन

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता,

कानपुर (उ.प्र.)-208 021

दूरभाष : 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

कॉपीराइट © डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय

मूल्य : 600/- (छः सौ रुपये मात्र)

शब्द-सज्जा

रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

मुद्रक

सार्थक प्रेस, कानपुर

अनुक्रम

1.	राजाराम मोहन राय (1772–1833) ***डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय**	11
2.	ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820–1891) ***पुनीता खरवार**	16
3.	स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883) ***डॉ० प्रियंका**	22
4.	ज्योतिबा फूले (1827–1890) ***डॉ० अर्चना बौद्ध**	31
5.	सावित्रीबाई फुले (1831–1897) ***डॉ० श्वेता बागड़े**	40
6.	रामकृष्ण परमहंस (1836–1886) ***प्रशांत त्रिवेदी**	51
7.	स्वामी विवेकानंद (1863–1902) ***डॉ० प्रत्यांशी द्विवेदी**	64
8.	श्री अरविंद घोष (1872–1950) ***डॉ० साधना त्रिपाठी**	70
9.	रविन्द्रनाथ टैगोर (1861–1941) ***डॉ० भुपेन्द्र कौर**	77

10 संत विनोबा भावे
(1895–1982)
***श्याम सुन्दर धाकड़** 85
11. गोपाल कृष्ण गोखले
(1866–1915)
***डॉ० प्रीति कछावा** 90
12. दादाभाई नौरोजी
(1825–1917)
***प्रणव पाण्डेय** 99
13. लाला लाजपतराय
(1865–1928)
***इंजी. अतिवीर जैन 'पराग'** 109
14. पंडिता रमाबाई
(1858–1922)
***नमिता** 113
15. महात्मा गाँधी
(1869–1948)
***डॉ० हरीश कुमार पाण्डेय **रामजी यादव** 124
16. जयप्रकाश नारायण
(1902–1979)
***डॉ० नरेन्द्र कुमार पाण्डेय** 136
17. राम मनोहर लोहिया
(1910–1967)
***ऋचा द्विवेदी** 140
18. पं. दीनदयाल उपाध्याय
(1916–1968)
***डॉ० किरण पोपकर** 145

9

रविन्द्रनाथ टैगोर

*डॉ० भुपेन्द्र कौर

सारांश–रवींद्रनाथ टैगोर आधुनिक भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वे एक महान कवि, दार्शनिक, शिक्षाविद् तथा समाज सुधारक थे। उनकी रचनाओं में मानवता, प्रकृति प्रेम, स्वतंत्रता और सार्वभौमिक बंधुत्व की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। टैगोर की कृति गीतांजलि के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिससे भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान मिली। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और शांति निकेतन में विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनकी साहित्यिक रचनाएँ कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और गीतों तक विस्तृत हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। टैगोर के विचार आज भी सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक जागरूकता और मानवतावादी दृष्टिकोण के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

मुख्य शब्दः रवींद्रनाथ टैगोर, गीतांजलि, भारतीय साहित्य, मानवतावाद, शिक्षा दर्शन, विश्वभारती, सांस्कृतिक चेतना।

जीवन परिचय– रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म बंगाल के प्रसिद्ध टैगोर वंश में 1861 ई0 में कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। टैगोर परिवार अपनी समृद्धि, कला, विद्या एवं संगीत के लिए सम्पूर्ण बंगाल में प्रसिद्ध था। टैगोर को अपने पिता से देशभक्ति, विद्वता, धर्मप्रियता व साधुता आदि गुण उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुए। वह अपने सभी भाई–बहनों में सबसे छोटे थे परन्तु उन्होंने अपने यश से न केवल परिवार वरन् सम्पूर्ण देश को गौरव प्रदान किया।

टैगोर को सर्वप्रथम ओरिएण्टल सेमेनरी स्कूल में प्रवेश कराया गया परन्तु इनका यहाँ मन नहीं लगा। इस कारण उनको कुछ महीनों के बाद नॉर्मल स्कूल में दाखिला दिया गया। इस काल में उन्हें कुछ कटु अनुभव प्राप्त हुए जिनके परिणामस्वरूप आगे चलकर उन्होंने आजीवन शिक्षा–सुधार के लिए प्रयास किया

*सहायक प्राध्यापक–शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

और आदर्श संस्था के रूप में **'शान्ति–निकेतन'** की स्थापना की जो आज **'विश्वभारती'** के नाम से प्रख्यात है।

वस्तुतः उनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्कूल से अधिक घर पर हुई थी। संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, चित्रकला व संगीत आदि की शिक्षा घर पर देने के लिए अलग–अलग शिक्षक नियुक्त किए गए। 1878 ई0 में टैगोर अपने भाई के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड गए। वहाँ उनको ब्राइटन स्कूल में दाखिला दिलाया गया परन्तु टैगोर इस विद्यालय में भी अधिक दिन नहीं रहे। वे वहाँ से लन्दन चले गए। यहाँ उन्होंने किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं लिया। 1880 ई0 में टैगोर स्वदेश लौटे। उनको विद्यालय की शिक्षा के नाम पर कुछ भी प्राप्त न हुआ। 1881 ई0 में टैगोर पुनः इंग्लैण्ड गए वे वहाँ कानून की शिक्षा प्राप्त करने के ध्येय से गए परन्तु विचार–परिवर्तन के कारण फिर वापस लौट आये।

1901 में टैगोर ने बोलपुर के समीप **'शान्ति–निकेतन'** की स्थापना की। उन्होंने इसमें स्वयं एक अध्यापक के रूप में कार्य किया। वह विद्यालय उदारता एवं विभिन्न संस्कृतियों के संगम स्थल के रूप में दिन–प्रतिदिन उन्नति करता गया। आज यह **'विश्व–भारती'** के नाम से प्रख्यात है। भारत के विश्वविद्यालयों में इसको अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

1919 ई0 तक टैगोर ने राजनीति के क्षेत्र में कार्य किया परन्तु वह इस क्षेत्र में होते हुए भी साहित्य की सेवा अनवरत रूप से करते रहे। महान् कवि एवं साहित्यकार के रूप में उनकी ख्याति देश की सीमाओं को पार कर गई। 1913 ई0 में उनको **'गीतांजलि'** पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

1920 से 1930 तक टैगोर ने यूरोप, एशिया तथा अमरीका के विभिन्न स्थानों पर यात्रा की। उन्होंने वहाँ विभिन्न स्थानों पर भाषण भी दिए। 1941 ई0 में इस महान् कवि, साहित्यकार एवं शिक्षाशास्त्री का देहान्त हो गया।

जीवन दर्शन : टैगोर को 'सत्यम्, शिवम्, अद्वैतम्' की धारणा में दृढ विश्वास था। उन्होंने ईश्वर को 'सर्वोच्च मानव' (Supreme man) के रूप में माना। वे अद्वैतवादी थे। ब्रह्म समाज से प्रभावित होने के कारण उन्होंने सर्वेश्वरवादी ब्रह्मवाद (Pantheistic Monism) को भी स्वीकार किया। कुछ सीमा तक वे सौन्दर्यात्मक समेकित ब्रह्मवादी (Aesthetic integral monist) भी थे। वे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते थे। कभी–कभी वे उसे मानव–शरीर वाला पर कभी–कभी निराकार मानते थे। वे सृष्टि को उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति समझते थे।

इस प्रकार के उच्च धार्मिक विचारों से सराबोर होते हुए भी वे पूर्ण रूप से मनुष्य थे। *डॉ एम0 पी0 वर्मा के शब्दों में–"वे प्रेम, साथीपन और सहयोग के भविष्यवक्ता थे। उन्होंने मनुष्य को एकता और सामंजस्य का पाठ पढाया। उन्होंने*

अनुभव किया कि मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आनन्द–प्रगति करना है। उन्होंने विभाजित करने वाले सिद्धान्त को सन्देश की दृष्टि से देखा और सम्पूर्ण मानव–जाति को एक माना। वे ईश्वर में विश्वास करते थे, इसलिए वे मनुष्य में विवास करते थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य परमात्मा का रूप है। ईश्वर की उपासना न केवल पवित्र नगरों के मन्दिरों और बड़े शहरों के गिरजाघरों में की जा सकती है वरन् भूमि को जोतकर और पत्थरों को तोड़कर भी की जा सकती है।"

टैगोर के जीवन–दर्शन का सार डॉ वर्मा ने इन शब्दों में लिखा है–"रविन्द्रनाथ ने मानव–स्वभाव के संवेगों के विनाश और उसके सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक पक्षों के दमन की स्वीकृति नहीं दी। उन्होंने मनुष्य के व्यक्तित्व और शक्तियों के सब पहलुओं के पूर्ण और शक्तिशाली विकार के सिद्धान्त को स्वीकार किया। उन्होंने आत्मा की भव्यताओं को पहाडों की अँधेरी गुफाओं और जंगलों के एकान्त स्थानों में खोजना अस्वीकार किया। वे जीवन की स्वीकृति चाहते थे उसको सभी पक्षों में–सुखों और दुःखों में आदर्शो और सद्भावनाओं में दुःखद घटनाओं और संकटपूर्ण परिस्थितियों में।"

शिक्षा–दर्शन : टैगोर शिक्षाशास्त्री के रूप में अपने स्वयं के प्रयास से प्रकट हुए। यह उसके जीवन और अनुभव का आवश्यक परिणाम था। उनका सम्बन्ध ऐसे परिवार से था जो सब प्रकार के प्रगतिशील विचारों, कार्यो तथा विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक आन्दोलन का केन्द्र था। उनके परिवार के सदस्यों में प्रायः सभी अच्छी बातों के जानकार थे। जैसे–दर्शन, विज्ञान, संस्कृति, कविता, कला, संगीत, नाटक, राष्ट्र–निमार्ण, समाज–सुधार, व्यवसाय और आध्यात्मिक अनुभव। टैगोर में ऐसी तीव्र और विविध ग्रहण–शक्ति थी कि उन्होंने इन सभी बातों को बड़ी सरलता से अपना लिया।

उपरोक्त गुणों के साथ–साथ टैगोर में और भी ऐसे अनेक गुण थे जिन्होंने उनको अति महान् शिक्षाशास्त्री बना दिया। उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि वे बड़ी सरलता से किसी ज्ञान को अपना बना सकते थे। उन्हें विज्ञान और मानव–शास्त्रों का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनकी अपेक्षा ड्यूवी का अधिक बातों में रूचि थी पर उसमें टैगोर के समान कलात्मक विषयों में रूचि नहीं थी। जैसे–कविता, उच्चकोटि का दर्शन, संगीत की सूक्ष्म बाते और कलाएँ। रूसो और फ्रॉबेल के समान टैगोर प्रकृति की शक्ति और गुणों को मानते थे पर प्रकृति से सम्पर्क रखने और इस सम्पर्क के कारण शिक्षा पर उसके प्रभावों को उन्होंने रूसो और फ्रॉबेल के बजाय कहीं अधिक अच्दी तरह समझा। सुनीलचन्द्र सरकार ने लिखा है–"टैगोर ने शिक्षा को जो योगदान दिया, उनमें पेस्टालॉजी और फ्रॉबेल के कार्य सम्मिलित हैं और उनके कार्यों में जो कमियाँ रह गई थीं, उनकी पूर्ति भी है। उदाहरणार्थ, फ्रॉबेल की किण्डरगार्टन पद्धित में रहस्यपूर्ण तत्त्व, खेल, नृत्य और रचनात्मक कार्यो का विशेष स्थान है। टैगोर ने बताया कि यह पद्धति

सफलतापूर्वक तभी कार्य कर सकती है, जब जीवन की कठोर वास्तविकताओं से दूर अति सुन्दर वातावरण का निर्माण किया जाये।"

शिक्षा–दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त या तत्त्व

1. छात्रों को भारतीय विचारधारा और भारतीय समाज की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।
2. छात्रों को नगर की गंन्दगी और अनैतिकता से दूर प्रकृति के घनिष्ठ सम्पर्क में रखकर शिक्षा दी जानी चाहिए।
3. छात्रों में संगीत, अभिनय और चित्रकला की योग्यताओं का विकास किया जाना चाहिए।
4. छात्रों को उत्तम मानसिक भोजन दिया जाना चाहिए जिससे कि उनका विकास विचारों के पर्यावारण में हो।
5. शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए और उसे भारत के अतीत एवं भविष्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
6. शिक्षा का समुदाय के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए और सजीव एवं गतिशील होने के लिए व्यापक होना चाहिए।
7. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सांमजस्यपूर्ण विकास करना।
8. शिक्षा का माध्यम 'मातृभाषा' होना चाहिए क्योंकि विदेशी भाषा के द्वारा अनन्त मूल्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
9. जनसाधारण को शिक्षा देने के लिए प्राथमिक विद्यालयों को फिर जीवित किया जाना चाहिए।
10. यथासम्भव शिक्षण–विधि का आधार–जीवन, प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितियाँ होनी चाहिए।

शिक्षा का अर्थ–टैगोर ने 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग 'व्यापक अर्थ' में किया है। उन्होंने अपनी पुस्तक में 'Personality' लिखा है–**"सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।"**

सम्पूर्ण सृष्टि से टैगोर का अभिप्राय है–संसार की चर और अचर, जड़ और चेतन, सजीव और निर्जीव–सभी वस्तुएँ। इन वस्तुओं से हमारे जीवन का सांमजस्य तभी हो सकता है, जब हमारी समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित होकर उच्चतम बिन्दु पर पहुँचा जाएँ। इसी को टैगोर ने 'पूर्ण मनुष्यत्व' कहा है। शिक्षा का कार्य है–हमें इस स्थिति पर पहुँचाना। इस दृष्टिकोण से टैगोर के अनुसार–शिक्षा, विकास की प्रक्रिया है। वह मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास करती है। अतः टैगोर के विचार में शिक्षा का रूप अत्यन्त व्यापक है।

शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत टैगोर ने शिक्षा के प्राचीन भारतीय आदर्श को स्थान दिया है। यह आदर्श–**'सा विद्या या विमुक्तये'**। इस आदर्श के अनुसार शिक्षा–मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन और मरण से मुक्ति प्रदान करती है। टैगोर ने शिक्षा के इस प्राचीन आदर्श को भी व्यापक रूप दिया है। उनका कहना है कि शिक्षा न केवल आवागमन से, वरन् आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मानसिक दासता से भी मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है। अतः मनुष्य को शिक्षा द्वारा उस सब ज्ञान का संग्रह करना चाहिए जो उसके पूर्वजों द्वारा संचित किया जा चुका है। यही सच्ची शिक्षा है। स्वयं टैगोर ने लिखा है–"सच्ची शिक्षा संग्रह किए गए लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के प्रयोग करने में उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने में और जीवन के लिए सच्चे आश्रम का निर्माण करने में निहित है।"

शिक्षा के उद्देश्य

टैगोर द्वारा निर्धारित किए जाने वाले शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. बालक के शरीर का स्वस्थ, स्वाभाविक विकास एवं उनके विभिन्न अंगों और इन्द्रियों को प्रशिक्षित करना।
2. बालक को वास्तविक जीवन की बातों, स्थिति और पर्यावरणों की जानकारी देकर एवं उनसे अनुकूलन कराके उसके मस्तिष्क का विकास करना।
3. बालक को धैर्य, शान्ति, अनुशासन, आन्तरिक स्वतन्त्रता, आन्तरिक शक्ति और आन्तरिक ज्ञान के मूल्यों से अवगत कराके, उसका नैतिक और आध्यत्मिक विकास करना।
4. बालक का वैयक्तिक, व्यावसायिक और सामाजिक विकास करना।
5. पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए बालक का पूर्ण विकास करना।

पाठ्यक्रम–टैगोर के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है–पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास करना। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के अनेक विषयों और क्रियाओं को स्थान देकर उसे व्यापक रूप प्रदान किया है। पाठ्यक्रम के कुछ मुख्य विषय और क्रियाएँ हैं–

(क) विषय–इतिहास, विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य आदि।

(ख) क्रियाएँ–नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना, अजायबघर के लिए वस्तुओं का संग्रह आदि।

(ग) अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाएँ–खेलकूद, समाज–सेवा, छात्र–स्वशासन आदि।

डॉ मुखर्जी का कथन है–"इस दृष्टिकोण से टैगोर की शिक्षा–संस्थाओं में लागू किया जाने वाला पाठ्यक्रम 'किया प्रधान पाठ्यक्रम' रहा है।"

शिक्षण–विधियाँ–टैगोर ने अपनी शिक्षण–विधि के निम्नलिखित प्रमुख सिद्धान्त बताये हैं–

1. शिक्षण–विधि को बालक की स्वाभाविक रुचियों और आवेगों पर आधारित करना।
2. शिक्षण–विधि को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, प्रकृति की वास्तविक बातों और समाज के वास्तविक जीवन के अनुकूल बनाना।
3. शिक्षण–विधि में वाद–विवाद और प्रश्नोत्तर का प्रयोग करना।
4. शिक्षण–विधि में नृत्य, अभिनय, दस्तकारी आदि को स्थान देखकर शारीरिक क्रिया को महत्त्व देना और इस प्रकार 'क्रिया–विधि' का प्रयोग करना।
5. शिक्षण–विधि में बालक के अनुभवों और इन्द्रियों का प्रयोग करना।

शिक्षण की सर्वोत्तम विधि बताते हुए टैगोर ने लिखा है–"भ्रमण के समय पढ़ना, शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है।"

शिक्षक का स्थान– टैगोर ने शिक्षण–विधि की तुलना में शिक्षक को बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए लिखा है–"शिक्षा केवल शिक्षक के ही द्वारा और शिक्षण–विधि के द्वारा कदापि नहीं दी जा सकती है। मनुष्य केवल मनुष्य से ही सीखता है।"

इस प्रकार टैगोर ने शिक्षक को शिक्षा–व्यवस्था का प्रमुख आधार माना है। इस रूप में शिक्षक के कार्य निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षक और बालक को समान रूप से सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुसरण और सत्य की खोज करनी चाहिए।
2. शिक्षक को बालक के जीवन को गति और मस्तिष्क के बन्धन से मुक्ति देनी चाहिए।
3. शिक्षक को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें बालक स्वानुभव द्वारा अधिक सरलता और दक्षता से सीख सके।
4. शिक्षक का कोई भी कार्य बालक की रचनात्मक शक्ति का दमन करने वाला और उसकी उल्लासवर्द्धक वृत्ति में बाधक नहीं होना चाहिए।
5. शिक्षक को शिक्षण–विधियों में विश्वास न करके जीवन के सिद्धान्तों, मानव–आत्मा की पवित्रता और व्यक्तिगत प्रेम में विश्वास करना चाहिए।
6. शिक्षक को बालक को प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करने चाहिए न कि पुस्तकीय ज्ञान क्योंकि ऐसा करने से वह बालक को ज्ञान का अर्जन करने की प्रेरणा नहीं दे सकता है।

शिक्षा में अन्तर्राष्ट्रीयता : रवीन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीयता के समर्थक थे। उन्होंने इसको 'अनेकता में एकता' के आदर्शवादी सिद्धान्त के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया। *टैगोर ने लिखा है–"यद्यपि मानव–जातियों में प्राकृतिक भेद हैं जिनकी रक्षा और सम्मान करना चाहिए। तथापि इन भेदों के होते हुए भी हमारी शिक्षा का उद्देश्य मानव एकता का बोध और विरोधों के बीच सत्य की खोज करना होना चाहिए।"* टैगोर अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने के लिए अन्तः सांस्कृतिक एवं अन्तर्जातीय सम्पर्क को बढ़ाना

चाहते थे। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्होंने **'विश्वभारती'** की स्थापना की।

टैगोर के अनुसार मानव जाति की एकता और उसके माध्यम में ब्रह्म की अभिव्यक्ति की भावना में ही अन्तर्राष्ट्रीयता का आधार आर्थिक व राजनीतिक न होकर आध्यात्मिक और मानवतावादी है।

टैगोर का प्रकृतिवाद : रवीन्द्रनाथ टैगोर की बालक के प्रति असीम सहानुभूति है। उनका विचार है कि बालक में जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं। उनकी अभिव्यक्ति के लिए उसे स्वतन्त्रता की आवश्यकता है। बालक का स्वयं का अपना व्यक्तित्व होता है। अतः हमें उसके व्यक्तित्व और उसकी मनोवृत्तियों की किसी भी प्रकार से अवहेलना नहीं करनी चाहिए। उसे प्रकृति के प्रांगण में स्वच्छन्द रूप विचरण करने के लिए अवसर प्रदान किए जाएँ जिससे वह अपना शारीरिक विकास कर सके। साथ ही उसे प्रकृति की पवित्र एवं प्रभावशाली शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव करने तथा उससे एकात्मीयता स्थापित करने के लिए अवसर प्रदान किए जायें जिससे वह अपनी आत्मोन्नति कर सके।

बालक के स्वाभाविक विकास के लिए टैगोर प्रकृति और मानव के बीच सक्रिय सम्बन्ध की स्थापना पर बल देते हैं। उनका मत है कि मनुष्य और प्रकृति ही व्यक्त रूप है। प्रकृति के विभिन्न रूपों में ब्रह्म की अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है। अतः मनुष्य के प्रकृति के साथ निकटता और घनिष्ठता के सम्बन्ध स्थापित होने चाहिए। ऐसे सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति के निरीक्षण द्वारा स्थापित किए जा सकते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर बच्चों को प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा प्रदान करने के समर्थक थे। वह बच्चों को प्रकृति के सम्पर्क में इस कारण लाना चाहते हैं जिससे उन्हें यथार्थ जगत का ज्ञान सफलतापूर्वक हो सके। उनका विचार है कि प्रकृति के सम्पर्क में रहने से बच्चों में कठिनाई सहन करने की क्षमता सहज में आ सकती है।

टैगोर के अनुसार प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना, सादगी का जीवन व्यतीत करना है। इस कारण उन्होंने छात्रों को सरल एवं सादा जीवन व्यतीत करने के लिए कहा। इस दृष्टि से उनके विचार रूसो से मिलते–जुलते हैं परन्तु उनके प्रकृतिवाद में भारतीय आदर्शवाद की झलक देखने को मिलती है। उन्होंने आश्रम व्यवस्था का समर्थन करके भारतीय आदर्श को ग्रहण किया। उनका विचार है कि आश्रम का पवित्र, प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन है।

अन्त में हम कह सकते हैं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रकृति का समर्थन करते हुए शिक्षक, पाठशाला या पुस्तकों की पूर्णतया उपेक्षा नहीं की। वह प्राकृतिक साधनों के द्वारा, प्रत्यक्ष वस्तु तथा मनुष्यों के सम्पर्क द्वारा बालकों को प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य देना चाहते हैं परन्तु इसके उपरान्त वे पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने के भी समर्थक हैं। अतः उन्होंने भी रूसो की भाँति प्रकृतिवाद को बालक की शिक्षा में पृष्ठभूमि के रूप में ग्रहण किया। वे अपने प्रकृतिवाद में रूसो से इस इस दृष्टिकोण से भिन्न हैं कि उन्होंने

भारतीय आदर्शवाद को इसमें स्थान प्रदान किया। वे प्रकृति को ब्रह्म की अभिव्यक्ति मानते हैं। टैगोर इसके सम्पर्क से ब्रह्म की अनुभूति करने पर बल देते हैं।

टैगोर के व्यक्ति तथा समाज सम्बन्धी विचार

टैगोर मूलतः व्यक्तिवादी हैं परन्तु उनका व्यक्तिवाद का स्वरूप भारतीय है। उनके व्यक्तिवाद में मानव एवं प्रकृति की एकता को व्यापक स्थान प्राप्त है। टैगोर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में ब्रह्म की स्थिति है। फिर भी प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से भिन्न एवं अद्वितीय है।

टैगोर 'व्यक्ति–स्वातन्त्रय' से व्यक्ति की भौतिक स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं लेते हैं वरन् उसकी आत्मा की स्वतन्त्रता से लेते हैं। 'व्यक्ति–स्वातन्त्रय' मनुष्य समाज के नियम–संयम के सम्बन्ध में रहकर ही प्राप्त कर सकता है। अतः मनुष्य का समाज के साथ यथार्थ सम्बन्ध जानने के लिए उसको (व्यक्ति को) उसके सत्य रूप में देखना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में टैगोर ने लिखा–"मनुष्य की आत्मा को समस्त देशिक और क्षणिक प्रयोजनों से अलग करके शुद्ध एवं व्यापक रूप में देखना होगा तभी संसार के सभी प्रयोजनों के साथ उसके सत्य सम्बन्ध और जीवन के क्षेत्र में उसके यथार्थ स्थान का निर्णय करना सम्भव हो सकता है।"

टैगोर का विचार है कि समाज का निर्माण इसलिए हुआ कि वह व्यक्ति को मुक्ति या आत्मा की स्वतन्त्रता के मार्ग में अग्रसर कराने का प्रयास करे। समाज और सामाजिक कर्त्तव्यों में व्यक्ति के व्यक्तित्व की पूर्ति होती है। टैगोर इस दृष्टि से केवल सामाजिक प्रगति के लिए समाज–सेवा को महत्त्व नहीं देते वरन् वह व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति के लिए उसे महत्वपूर्ण मानते हैं। इस दृष्टिकोण से व्यक्ति और समाज को एक–दूसरे की उन्नति के लिए आवश्यक मानते हैं। उसके अनुसार व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता केवल समाज के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा–दर्शन का मूल्यांकन

टैगोर के शैक्षिक विचार और प्रयोग बिल्कुल नए और मौलिक जान पड़ते हैं। यद्यपि उनमें से अधिकांश को प्राचीन समय के शिक्षाशास्त्रियों द्वारा किसी–न–किसी रूप में विकसित किया जा चुका था और तत्कालीन शिक्षाशास्त्रियों द्वारा कम या अधिक मात्रा में उनका प्रयोग किया जा रहा था। पर महत्वपूर्ण बात यह है कि 20वीं शताब्दी के प्रथम भाग के भारतीय शिक्षाशास्त्रियों में टैगोर सबसे श्रेष्ठ थे।"

टैगोर के शिक्षा–दर्शन का मूल्यांकन करते हुए डॉ0 एच0 बी0 मुख्र्जी ने लिखा है– *"टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरूत्थान के सबसे महान् पैगम्बर थे। उन्होंने अपने देश के सामने शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित रखने के लिए निरन्तर संघर्ष किया। उन्होंने अपनी शिक्षा–संस्थाओं में शैक्षिक प्रयोग किए, जिन्होंने उनको आदर्श का सजीव प्रतीक बना दिया।"*

■

लेखक/संपादक परिचय

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश में एक सुभ्रांत एवं सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने कानपुर विश्वविद्यालय से वर्ष 2009 में प्राचीन भारतीय इतिहास विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की और वर्ष 2013 में "जैन पुराणों का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन" विषय पर प्रो. बी.एम. त्रिपाठी जी के कुशल मार्गदर्शन में शिक्षा जगत की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त किया। आपने 60 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता कर उत्कृष्ट शोधपत्रों का वाचन कर चुके हैं, साथ ही आपके 70 से अधिक शोध पत्र/शोध आलेख प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

शिक्षा, साहित्य व शोध के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए आप कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। अभी तक आपकी 75 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप विगंत 16 वर्षों से विभिन्न कॉलेजों/विश्वविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक, प्रभारी प्राचार्य, विभागाध्यक्ष व विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य किया, साथ ही भारत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.) में सहायक कुलसचिव (शोध) के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। वर्तमान में आप एस. आई. आई. कॉलेज, उत्तराखण्ड में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं।

पुस्तक के बारे में...

"भारतीय आधुनिक विचारक" पुस्तक भारतीय बौद्धिक परंपरा के उन महान चिंतकों का समग्र परिचय प्रस्तुत करती है, जिन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में वैचारिक आधार प्रदान किया। इस पुस्तक में प्रमुख रूप से राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और पं. मदन मोहन मालवीय जैसे विचारकों के जीवन, दर्शन और सामाजिक योगदान का विश्लेषण किया गया है।

पुस्तक का उद्देश्य केवल जीवनी प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को भी स्पष्ट करना है। इसमें सामाजिक सुधार, राष्ट्रवाद, शिक्षा, लोकतंत्र, समानता और आध्यात्मिक चेतना जैसे विषयों पर इन चिंतकों के दृष्टिकोण को सरल एवं शोधपरक शैली में समझाया गया है।

संकल्प प्रकाशन

1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा
बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208021
Mob. : 70077-49872, 94555-89663
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

Also available at : Flipkart

ISBN 978-93-48772-40-4

9 789348 772404 >

₹500/-